International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(4): 224-225

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(4): 224-225
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 14-05-2022
Accepted: 17-06-2022

डॉ. कुशम लता
संस्कृत–विभाग, हि.प्र.विश्वविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. कुशम लता
संस्कृत–विभाग, हि.प्र.विश्वविद्यालय, शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

कवि जयनारायण यात्री द्वारा विरचित भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः काव्य में राजनैतिक–स्थिति

डॉ. कुशम लता

प्रस्तावना

राज्य की सुखसमृद्धि, रक्षा और शासन का संचालन करना राजा का पुनीत कर्त्तव्य होता था। अपनी सुविधा के लिए राजा मन्त्रिपरिषद का गठन करता था। मन्त्रिपरिषद के सहयोग से वह अपने राज्य की व्यवस्था किया करता था। ''कामन्दकीय–नीतिसार'' के अनुसार राज्य के समस्त अंगों की उत्पत्ति राष्ट्र से होती है। मनु के अनुसार ऐश्वर्यशाली राष्ट्र में आर्य एवं शिष्ट व्यक्तियों का निवास होना चाहिए।

राजा

कामन्दक के अनुसार जगत् की उत्पत्ति एवं वृद्धि का एकमात्र कारण राजा ही होता है। राजा प्रजा के नेत्रों को उसी प्रकार आनन्द देता है जिस प्रकार चन्द्रमा समुद्र को आह्लादित करता है।[1]
युद्ध में आगे रहना, प्रजा का पालन करना और ब्राह्मणों की सेवा करना ये राजा के लिए परम श्रेयस्कर कर्त्तव्य है।[2] 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में राजा प्रतीपक की राज्य व्यवस्था के बारे में इस प्रकार से कहा गया है –

चारा नियुक्ताः सकलत्र दक्षाः
प्रजाजनानां श्वसितं विवेद
तस्मादगुप्तं कुरूतेऽस्ति कः किं
यः सावधानो नहि वञ्च्यते सः।।[3]

अर्थात् उसने सब जगह कुशल गुप्तचर नियुक्त किए हुए थे। वह प्रजाजनों के साँस लेने को भी जानता था। कौन क्या करता है? उससे कुछ छिपा हुआ नहीं था, जो सावधान है, वह ठगा नहीं जाता।

राज्य–व्यवस्था

राजशास्त्रों में राज्य को सप्तांग माना गया है। ''महाभारत'' के अनुसार सात अंगों वाले राज्य की रक्षा यत्नपूर्वक की जानी चाहिए।[4] कौटिल्यप्रणीत ''अर्थशास्त्र'' के अनुसार स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड तथा मित्र ये राज्य के सात अंग होते हैं[5], जिन्हें प्रकृति कहा जाता है। राज्य के जिन सात अंगों की मनु[6], कामन्दक[7], और कौटिल्य[8] ने चर्चा की है जयनारायण यात्री ने उन्हीं का उल्लेख किया है।

अमात्य

कौटिल्य ने अमात्य का महत्त्व बताते हुए लिखा है कि जिस प्रकार रथ एक पहिए से नहीं चल सकता उसी प्रकार राज्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए राजा को भी अमात्य रूपी दूसरे चक्र की आवश्यकता होती है।[9] 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में अमात्य का वर्णन इस प्रकार से है –

यथा –

एषैवाशा नयकृतमुख! त्वत्त आसीदतोऽहं
यात स्तप्तुं भवति निखिलं राज्य भारं विहाय।

अग्रेगण्य स्त्वमसि सुधियां पूर्णकर्त्तव्यनिष्ठो,
राज्यं मत्या तव चलति राड् नाममात्र प्रतीपः।।[10]

राजा बोला – हे (नयकृतमुख) राजनीति में कुशल आपसे यही आज्ञा थी। इसीलिए मैं तप करने के लिए चला गया था, आपके ऊपर सारे राज्य का भार छोड़कर। तुम अच्छी बुद्धिवालों में सबसे आगे गिनने योग्य हो और कर्त्तव्य का पालन करने वाले हो। राज आपकी बुद्धि से चलता है प्रतीपक तो नाममात्र का राजा है।

पुरोहित

कौटिल्य के अनुसार पुरोहित को शास्त्रप्रतिपादित विद्याओं से युक्त, उन्नतकुलशील तथा मानुषी आपत्तियों का अथर्ववेद आदि में बताए गए उपायों से प्रतीकार करने वाला योग्य व्यक्ति होना चाहिए।[11] ''भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः'' में पुरोहित के विषय में इस प्रकार से लिखा गया है –

तत्र स राजपुरोहित माहूयावोचत् परमपूजनीय गुरुदेव!
तरूणी यं मम जाया जाता। अत आवयो र्विवाहसंस्कारं करोतु भवान्।[12]

राजा शान्तनु राजपुरोहित को बुलाकर बोला परमपूजनीय गुरुदेव! यह युवती मेरी पत्नी बन गई है। इसलिए आप हम दोनों का विवाह संस्कार कर दो।

सेनापति

राज्य के सप्तांगों में सेनापति का स्थान भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। बल बिना राज्य की रक्षा एवं प्रशासनिक स्थिरता नहीं लाई जा सकती। 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में सेनापति के विषय में राजा प्रतीपक, शान्तनु से इस प्रकार कहता है –

यथा –

पुत्रः। सेनानायकं कदाचिदाहूय कुशलप्रश्नं पृष्ट्वा सेनाविषये सर्वंकिञ्चिद् विज्ञातव्यम्। गमनात्पूर्वं स जलपानेन संतोषनीयः।[13]

गुप्तचर

गुप्तचर राजा की आँखें हैं। इन्हीं के द्वारा वह राज्य की गतिविधियों को देखता रहता है। ''याज्ञवल्क्यस्मृति''[14] एवं ''महाभारत''[15] में भी इनका महत्त्व प्रतिपादित है। 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में राजा ने सब जगह कुशल गुप्तचर नियुक्त किए हुए थे।

शक्तित्रय

प्रभुशक्ति, मन्त्रशक्ति तथा उत्साहशक्ति ये राज्य के तीन बल हैं। 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में शक्तित्रय के विषय में इस प्रकार से बताया गया है।

पुनश्च कोशबलं ध्याय। दुर्गतं प्रति कश्चित् पश्यत्यति न। अतः कोशबलं सदैवावधेयम् कोशबलेनैव शासनं चलति।[16]
राष्ट्र रक्षा

सेना

कोष और सेना राज्य के आधार माने जाते हैं। राजा की शक्ति सैन्यबल के आधार पर ही अधिक प्रभावशाली होती थी। 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में सेना के विषय में इस प्रकार से बताया गया है –

यथा –

भूपसारो न सारोऽस्ति, वास्तविकं चमूबलम्।
सेनासुरक्षितो राजा न स स्वबलरक्षितः।।[17]

अर्थात् राजा का अपना बल, बल नहीं होता, असली सेना का बल होता है। राजा सेना से सुरक्षित होता है, वह अपने बल से सुरक्षित नहीं होता।

न्याय व्यवस्था

धर्मशास्त्रों में राजा द्वारा न्याय करने के लिए पहले अपने मन्त्रियों, विद्वान् ब्राह्मणों एवं सभ्यों के साथ परामर्श करके तत्पश्चात् जनता के समक्ष निःस्वार्थ भाव से अपने विचार रखने का उल्लेख है।[18] 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' के द्वितीय परिच्छेद में न्याय व्यवस्था के बारे में इस प्रकार से कहा गया है –

यथा –

न्यायविधाने धर्मराज इव, कृतागः
पुत्रोऽप्यक्षम्योऽनपराधी रिपुरपि क्षम्योनिष्पक्षन्यायकर्ता।[19]

अर्थात् राजा प्रतीपक न्याय करने में धर्मराज की तरह, अपराधी पुत्र भी अक्षम्य है, निरपराधी शत्रु भी क्षम्य है, निष्पक्ष न्याय करने वाला है।

निष्कर्ष

ऊपरलिखित विवरण से स्पष्ट है कि 'भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः' में राजनैतिक स्थिति का बड़े ही सुंदर ढंग से वर्णन किया गया है। इसमें राजा, राज्य–व्यवस्था, अमात्य, पुरोहित, गुप्तचर, सेना और न्याय व्यवस्था का बड़े ही विस्तृत ढंग से वर्णन किया गया है। अतः शोध–कर्त्री को पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत शोध–कार्य अन्य अनुसंधानकर्त्ताओं को एतादृष विषय पर अनुसंधान करने हेतु प्रेरित करेगा।

सन्दर्भ–सूची

1. कामन्दकीयनीतिसार, 1.9
2. मनुस्मृति, 17.99.144
3. भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः, 2.1
4. महाभारत, शान्तिपर्व, 69.64–65
5. कौटिल्य, अर्थाशास्त्र, 6.1.1
6. मनुस्मृति, 9.294
7. कामन्दकीय नीतिसार, 4.12
8. कौटिल्य अर्थशास्त्र, 6.1.1
9. वही, 1.7.15
10. भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः, 3.22
11. अर्थशास्त्र, 1.9.15
12. भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः, अष्टम परिच्छेद, पृष्ठ 151
13. वही, सप्तम परिच्छेद, पृष्ठ 132
14. याज्ञवल्क्यस्मृति, 1.327
15. महाभारत, 6.36, 7.13
16. भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः, सप्तम परिच्छेद, पृष्ठ 133
17. वही, 7.8
18. मनुस्मृति, 8.43
19. भीष्मप्रतिज्ञा चम्पूः, द्वितीय परिच्छेद, पृष्ठ 26